जय प्रकाश कर्दम के छप्पर में अंबेडकर वादी विचार

तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति अध्ययन शाला

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर मध्य प्रदेश

सुमीर ठाकरे (शोधार्थी) **शोध निर्देशक ~डॉ. सुरेन्द्र कुमार जैन**

सह प्राध्यापक ,सेवासदन महाविद्यालय , बुरहानपुर

जय प्रकाश कर्दम द्वारा लिखित 'छप्पर' हिन्दी में दलित साहित्य में प्रारंभिक उपन्यासों में से एक है । कई आलोचक इसे हिन्दी दलित साहित्य का प्रथम उपन्यास भी मानते हैं यह उपन्यास अंबेडकर और बौद्ध दर्शन से प्रभावित और दलित चेतना से परिपूर्ण है। जिस समय इस उपन्यास की रचना हुई उस समय हिन्दी दलित साहित्य में दलित आत्मकथाओं का वर्चस्व था । इस दृष्टि से छप्पर ने विधा के रूप में हिन्दी दलित साहित्य के लिए नई जमीन तैयार की। छप्पर द्वारा नवीन व्यवस्था की संकल्पना पेश की है। यह उपन्यास दलित आक्रोश और दलित चेतना को नई दिशा देने की कोशिश करता है, इस कारण से हिन्दी दलित उपन्यास की परंपरा में छप्पर का महत्वपूर्ण स्थान है।

गंगा के पर बसा पश्चिमी उत्तर प्रदेश का एक छोटा सा गाँव है मातापुर। अन्य बाहरी गांवों की तरह मातापुर में भी थोड़े से लोग सुखी और संपन्न तथा शेष लोग दीन और दरिद्र हैं। सुखी संपन्न लोगों में सवर्ण कहलाने वाले ब्राह्मण पुरोहित,ठाकुर जमींदार तथा लाला साहूकार हैं। दूसरे गांवों की तरह सवर्ण लोग ऊपर की ओर तथा शूद्र कहे जाने वाले दलित लोग गंगा के बहाव की ओर निचान में बसे हैं । निचान की ओर गांव के इस छोर का सबसे आखिरी घर है सुक्खा का । उससे आगे एक दो टूटी फूटी छान झोपड़ियां है और फिर कूडी बिठा शुरू हो जाते हैं।

संपन्न सवर्ण लोगों के घर काफी बड़े,पक्के और प्लास्टर युक्त हैं । रहने के लिए दुमंजले तीनमंजिले और उठ बैठ के लिए लंबे चौड़े अहाते में बैठक या चौपाल और ढोर डांगरों के लिए जगह अलग।

किंतु जो लोग दलित और दरिद्र हैं उनके पास रहने सहने तथा एकाध पशु, जो वह पालते हैं,उन सब के लिए कुल जमा गारा मिट्टी की दीवारों पर घास फूस के छप्पर या झोपड़ियां हैं इकछत्ती दुछत्ती । अधिक हुआ तो किसी कच्चे कोठे पर बांस की खपच्ची या खपरैल की छत होती है या पशुओं के लिए छान झोपड़ी अलग । यहीं तक सीमित है उनकी साधना सम्पन्नत। घर के नाम पर सुक्खा के पास भी सिर छिपाने के लिए सिर्फ ऐसा ही एक छप्पर है और इसी छापर के नीचे वह पत्नी रमिया के साथ रहता है।

मैं गंवार आदमी क्या जानूं पढ़ाई लिखाई की बात। जैसे तू कुछ नहीं जानती वैसे ही मेरे लिए भी काला आखर भैंस बराबर है ।

इससे आगे वह कोई तर्क नहीं कर सकती थी रमिया, उसे भी चुप लगाना पड़ा। पर कब तक ? मौन से ज्यादा वाचाल और मौन से ज्यादा आंदोलित करने वाला और कुछ नहीं होता । शब्द मुखरित हो जाएं एक बार तो मन हल्का हो जाता है, पर मौन बड़ा गंभीर होता है। जब तक मौन न टूटे मन में उथल पुथल मची रहती है। अंतर में पुनः पुनः कुछ उकसता रहता है, छटपटाता रहता है मुखरित होने को।

शहर में भी बहुत से दलित और दरिद्र लोग बिना छूकी भुनी सब्जी खाते हैं या केवल पानी या चाय के साथ नमक की रोटियां गले से उतारकर जिंदा रहते हैं। फाका भी रह जाता है बहुत से घरों में।

यहां भी तन ढकने को कपड़ा नहीं है बहुत से लोगों के पास । यहां भी गांवों की तरह बच्चे रेत मिट्टी में खेलते नंगे घूमते है। बहुत सी औरतों के पास यहां भी मैली कुचैली सी सिर्फ एक साड़ी होती है, सस्ती भी कच्चे पक्के रंग की । दूसरी सादी के अभाव में बहुत सी औरतें, नहा धो नहीं पातीं महीनों तक । इतना ही नहीं, बहुत सी गर्भवती महिला को फुटपाथ पर ही खुले आकाश के नीचे बच्चे पैदा करने पड़ते हैं । यह एक विवशता है, एक त्रासदी है उनके जीवन की , जिसे नियति का आदेश मान बैठे हैं ये लोग।

यूं चंदन हरिया के घर में रहता था, पर हरिया ने कभी किराएदार या बाहर का आदमी नहीं माना उसे। न ही चंदन को कभी ऐसा आभास होता था। हो भी कैसे जब हरिया चंदन को पुत्रवत स्नेह करता हो और चंदन भी उसके साथ पितातुल्य व्यवहार रखता हो। कोठरीनुमा जिस कमरे

में चंदन रहता था उसका किराया तय नहीं था कि वह कमरे का किराया तय कर ले , लेकिन तय तो तब करता जब हरिया ने अवसर दिया हो।

फिर भी जैसे ही चंदन को अवसर मिला उसने किराया तय करना चाहा हरिया से । लेकिन हरिया अलग किस्म का आदमी था । साफ इनकार कर दिया उसने , तुम यहां रहो बेटा , जब तक तुम्हें रहना है।

हरिया ऐसा कह रहा है यह उसकी सज्जनता है चंदन मन ही मन सोचा और हरिया से बोल उठा , वह सब ठीक है बाबा । लेकिन मैं कहीं और जगह रहता तो वहां भी तो मुझे किराया देना पड़ता कि नहीं। चंदन तो सीधे स्वभाव कह गया पर हरे जख्म पर सुई चुभ जाने जैसी पीड़ा हुई हरिया को । मन आहत हो उठा उसका । अवरुद्ध कंठ से बोला वह , मैं तो बहुत खुशी से अपने पास रखना चाहता था तुम्हें । वर्षों की गमगीनता के साए में जीता आया हूं मैं। सोचता था तुम पास रहोगे तो थोड़ा सुख संतोष मिलेगा मन को, लेकिन तुम बोझ कहते हो अपने आपको। मैंने तो ऐसा कभी नहीं सोचा बेटा । तुम्हें ऐसा लगता है तो जाओ - जहां तुम्हें अच्छा लगे । मुझ बूढ़े का क्या , जैसे अब तक जीते आया हूं आगे भी जी ही लूंगा जैसे तैसे । और फिर खुद ही बुदबुदाने लगा , धरती पर बोझ नहीं होता आदमी, आदमी पर बोझ होता है कैसी व्यवस्था है, यह कैसी सोच है- हे भगवान.....।

जून के अन्त तक मानसून आ जाता है आमतौर पर उत्तरी भारत में, लेकिन उस वर्ष अगस्त शुरू होने तक भी मानसून नहीं आया। मानसून न आने का नतीजा यह हुआ कि सारी फसल चौपट हो गई। पानी का जल स्तर नीचे चले जाने से हैण्ड पंप में पानी आना बन्द हो गया, अनेक बीमारियों फैल गई तथा महामारी और अकाल से लोग परेशान हो उठे। देश के दक्षिण-पूर्वी भागों में मानसून न केवल आ चुका था बल्कि इतना पानी बरसा कि कई नदियों में बाढ़ आ गई। गाँव के गाँव तहस-नहस हो गए, लाखों लोग बेघर हो गए, हजारों आदमी और मवेशी पानी में बह गए। उधर बाढ़ से और इधर सूखे से चारों ओर त्राहि-त्राहि मची थी। इस प्राकृतिक आपदा से बचने के निमित्त आकाश के देवता इन्द्र को प्रसन्न करने के लिए जगह-जगह यज्ञ और हवन किए जा रहे थे क्योंकि लोगों का विश्वास था कि भगवान इन्द्र रुष्ट है और इसीलिए वर्षा नहीं हो रही है।

सन्त नगर जे.जे. कालोनी के लोगों ने भी एक यज्ञ का आयोजन करने का विचार बनाया और चन्दा इकट्ठा करना शुरू किया, लेकिन चन्दन ने इस यज्ञ का विरोध किया। उसने लोगों से कहा, 'यह मान्यता गलत है कि यज्ञ करने से भगवान इन्द्र प्रसन्न होंगे और तब वर्षा होगी। वर्षा होगी मानसून के आने से। अभी मानसून नहीं आया है इसलिए वर्षा नहीं हो रही है। यज्ञ-सब बेकार की चीजें हैं। यह पाखण्ड है, इससे कुछ होने वाला नहीं है। दुनिया में ऐसा कोई देवता या भगवान नहीं है और इसलिए उसके द्वारा वर्षा कराए जाने की कोई संभावना नहीं है।"

क्या कहते हो बाबू। चन्दा मत दो लेकिन भगवान को तो मत नकारो। भगवान के किए ही सब होता है। उसकी इच्छा के बिना तो पत्ता तक नहीं हिल सकता। इन्द्र भी वही है, लक्ष्मी भी वही है, महादेव भी वही है। वह एक है लेकिन उसके रूप अनेक हैं। मनुष्यों में भी वही है, जीव-जन्तुओं में भी वही है। हमारे-तुम्हारे अन्दर भी वही है। इसलिए भगवान के यज्ञ के लिए तुम कुछ दो या न दो लेकिन इस तरह की उल्टी-सीधी बातें तो मत करो।' चन्द्रा माँगने वालों में से एक ने चन्दन से कहा।

उल्टी-पुल्टी नहीं साफ-सीधी बात कह रहा हूँ मैं। दुनिया में ऐसा कोई भगवान, ईश्वर या परमात्मा नहीं है जो सर्वशक्तिमान और सर्वव्यापी है। जो सभी को पैदा करने वाला, पालन करने वाला और संहार करने वाला है। जो शाश्वत और चैतन्य है। जो जगत का नियामक तथा अनादि और अनन्त है। यह मान्यता असत्य, भ्रामक तथा वैज्ञानिकता से परे है। यदि तुम लोग इस बात को मानते हो तो यह तुम लोगों की भूल है। सच्चाई यह है कि दुनिया में आत्मा, परमात्मा, ईश्वर, ब्रहम, भगवान या इस तरह की किसी सत्ता का कोई अस्तित्व नहीं है। मनुष्य सबसे बड़ी सत्ता है. दुनिया में मनुष्य से बड़ी कोई चीज नहीं है। आत्मा, परमात्मा, ईश्वर, ब्रहम और भगवान, इसमें से कोई भी वास्तविक नहीं है। ये सब मिथक हैं, काल्पनिक हैं तथा भोले-भले लोगों को बेवकूफ बनाकर अपने स्वार्थ सिदध करने के उद्देश्य से चालाक लोगों द्वारा ईजाद किए गए हैं।' चन्दन ने उनको समझाने की चेष्टा की। चन्दन भैया। फिर ये यज्ञ और हवन क्यों किए जाते हैं, इनका भी तो कुछ कारण होता होगा?" दूसरे व्यक्ति ने प्रश्न किया।

'हां, इसका भी कारण है। प्रत्येक कार्य का कोई न कोई कारण अवश्य होता है, बिना कारण के कोई कार्य नहीं हो सकता। देवी-देवताओं की पूजा- अर्चना तथा उनके लिए यज्ञ और हवन आदि

अनुष्ठानों की परंपरा के पीछे एक ही उद्देश्य रहा है और वह है समाज को दिव्य शक्तियों से भयभीत रखकर धर्म विशेष को जीवित रखना। यज्ञ आदि अनुष्ठानों के पीछे यही कारण है और भारतीय समाज की यह एक त्रासदी है कि किसी भी आपदा के समय उससे निपटने के उपाय खोजने की बजाय देवी-देवताओं की पूजा- अर्चना की जाती है, तरह-तरह के अनुष्ठान किए जाते हैं। तुम लोगों को भी यह बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए कि पत्थर के इन देवी-देवताओं या भगवानों की पूजा-अर्चना करने या उनको भेंट चढ़ाने से कुछ भी होने वाला नहीं है। इस सबका कोई औचित्य नहीं है सिवाय इसके कि इसके सहारे कुछ लोगों की आजीविका चलती है और उनको मेहनत करके कमाने की जरुरत नहीं पड़ती।' 'पूरे नास्तिक हो तुम तो भैया, भगवान को तनिक भी नहीं मानते।' इस बार तीसरे व्यक्ति की टिप्पणी थी। 'यदि ईश्वर या भगवान की सत्ता को मानना ही आस्तिक या नास्तिक होने का आधार है तो निश्चित रूप से मैं नास्तिक हैं। मैं किसी आत्मा, परमात्मा, ईश्वर या भगवान की सत्ता को स्वीकार नहीं करता। चन्दन ने दृढ़ता से कहा।

'लेकिन भैया, सदियों से जो मान्यता चली आ रही है, वह तुम्हारे अकेले के कहने से तो बदल नहीं जाएगी। तुम्हारे अकेले के न मानने से क्या होता है। सारी दुनिया ईश्वर को मानती है। ईश्वर तो है और रहेगा। यह कथन एक बुजुर्ग आदमी का था।

चन्दन ने देखा कि उसके समझाने का उन लोगों पर कोई खास असर नहीं हो रहा है। उनको समझाने को दूसरा रास्ता अपनाया उसने और उनसे ही प्रश्न किया, 'क्या तुम लोग मानते हो कि ईश्वर है?

हाँ, इसमें क्या शक है। हम ही क्या सब मानते हैं।' लगभग सभी लोगों ने एक-दूसरे की हाँ में हाँ मिलाई। चन्दन ने दूसरा प्रश्न किया, 'तुम लोग यह भी मानते हो कि ईश्वर सर्वशक्तिमान और सर्वव्यापी है और सब कुछ उसकी इच्छा और आदेश से ही होता है? 'हाँ हॉ, बिल्कुल मानते हैं,' लोगों ने फिर एक स्वर में सहमति जताई। चन्दन ने अगला सवाल किया, 'तो इसका मतलब यह हुआ कि तुम्हारी जो आज दीन-हीन हालत है, तुम जो रोजी-रोटी के लिए दूसरों के मुहताज हो और तुमको नीच, अछूत या हेय मानकर दूसरे लोग तुमसे जिस प्रकार घृणा और उपेक्षा का व्यवहार करते हैं, तुम जो शोषण, अपमान और अत्याचार के शिकार हो इस सबका कारण ईश्वर है. वही तुम्हारी यह दुर्दशा कर रहा है। कहते-कहते चन्दन एक क्षण रुका और

लोगों की ओर देखा। किसी से कुछ भी बोलते नहीं बन पा रहा था। सबके सब एक-दूसरे का मुँह ताकने लगे। चन्दन ने आगे कहा, 'एक तरफ तुम हो और दूसरी ओर वे लोग हैं जो किसी जाति में जन्म लेने मात्र से श्रेष्ठ समझे जाते हैं, चाहे वे कुरूप तथा आचरण से गिरे हुए हों। वे लोग जो कोठियों और बंगलों में रहते हैं, कारों में घूमते हैं, जिनकी तिजोरियों नोटों से भरी हैं। जो तुम्हारी कमरतोड मेहनत के बदले तुम्हें उचित मजदूरी तक नहीं देते, तुम्हारा शोषण करते हैं। यह सब भी ईश्वर करता है, है न?'

चन्दन ने लोगों की ओर प्रश्न सूचक दृष्टि से देखा। दबी जबान से लोगों ने स्वीकृति में सिर हिलाए। चन्दन ने आगे कहा, 'यदि आपकी बात ही सच मान ली जाए कि ईश्वर है, तो आप ही देखिए कि वह कितना अन्यायी और निर्दयी है। तुम लोग जिस ईश्वर को मानते हो, उसकी पूजा-अर्चना करते हो, उसको प्रसन्न रखने के लिए भेंट चढ़ाते हो, उसे तुम पर तनिक भी दया नहीं आली है और वह तुमको पशुवत और नारकीय जीवन जीने को बाध्य करता है। तब तुम ही सोचो कि यदि ईश्वर है भी तो ऐसे ईश्वर को क्यों माना जाए? उसकी पूजा-अर्चना क्यों की जाए। जो ईश्वर तुम्हारा भला नहीं करता बल्कि बुरा करता है उसको मानने का कोई औचित्य नहीं है।'

धर्म ग्रन्थ ही हमारे शोषण और अत्याचार की जड़ें हैं। इन जड़ों को उखाड़ फेंकने की जरूरत है। और उसके लिए जरूरी है कि लोग अधिक से अधिक पढ़ें ताकि इन धर्म ग्रंथों में निहित अन्याय और असमानता के दर्शन को समझ सके तथा अन्याय, शोषण, असमानता के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए स्वयं को तैयार कर सकें।

दलित चेतना का विकास शिक्षा के द्वारा ही होगा । दलितों की मुक्ति का मार्ग इसी से खुलेगा । शिक्षा से ही वह आगे बढ़ सकते हैं । संगठित हो सकते है और संघर्ष कर सकते हैं। सुक्खा हर हाल में अपने पुत्र चंदन को अच्छी शिक्षा देना चाहता है तो शहर में हरिया चंदन की हर तरह से मदद करता है। चंदन के माध्यम से उपन्यासकार ने नई पीढ़ी के उस दलित युवक की रचना की जो अपने जीवन को अंबेडकर वाद और बौद्ध दर्शन से प्रेरित होकर दलित समाज की स्थिति को बदलना चाहता है । चंदन के लिए सामाजिक परिवर्तन सबसे ऊपर है। वह जानता है-

“दलितों के लिए अवसर की समानता का कोई मतलब नहीं है। क्योंकि जाति की बाधा दलित को अवसर का उपयोग नहीं करने देती”।

चंदन सामाजिक सम्मान को सबसे प्रमुख मानता है। कॉलेज में अपने दलित सहपाठियों को वह कहता है “मैं तो कहता हूं कि हमें प्रत्येक क्षेत्र में आना चाहिए। केवल सामाजिक रूप से ही हमारी स्थिति निम्न नहीं है बल्कि आर्थिक, राजनीतिक,शैक्षिक प्रत्येक क्षेत्र में हम पिछड़े हुए हैं। हमें प्रत्येक क्षेत्र में ऊपर आने की जरूरत है, लेकिन सबसे पहले जरूरत है सामाजिक सम्मान की। यदि तुम्हारी सामाजिक हैसियत अच्छी है तो हर कहीं गुंजाइश हो सकती है। यदि तुम्हारी कोई सामाजिक हैसियत नहीं है तो तुम चाहे कोई भी काम कर लो,कितना भी धन कमा को उस सबका कोई मतलब नहीं है। पैसा भी जीवन का फैक्टर है मैं इससे इनकार नहीं करता लेकिन इससे पहले जरूरी है समाज में तुम्हारी हैसियत का होना”

संदर्भ सूची

1 छप्पर,जय प्रकाश कर्दम, राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली,2017,पृष्ठ संख्या 1

2. वही पृष्ठ संख्या 2

3. वही पृष्ठ संख्या 7

4. वही पृष्ठ संख्या 11

5. वही पृष्ठ संख्या 18

6. वही पृष्ठ संख्या 19

7. वही पृष्ठ संख्या 20

8. वही पृष्ठ संख्या 23

9. वही पृष्ठ संख्या 24

10 वही पृष्ठ संख्या 26

11 वही पृष्ठ संख्या 27

12. वही पृष्ठ संख्या 29

13. छप्पर, जय प्रकाश कर्दम,राहुल प्रकाशन दिल्ली, पृष्ठ संख्या 37

14. वही पृष्ठ संख्या 40

15. वही पृष्ठ संख्या 41